संकट के दौर से गुजरते हुए

– कुलदीप शर्मा

एक अदृश्य वायरस ने ऐसे पैर फैलाये कि सरकार ने सभी के लिए सामाजिक दूरी को ही एकमात्र विकल्प समझते हुए 21 दिन का लॉकडाउन घोषित कर दिया। रेल और गाड़ियों के पहिये क्या थमे सारी दुनिया जहां की तहां रुक गयी। सारे ऑफिस और कार्यालयों पर ताले लग गए।

एक अदृश्य और अनजाने दुश्मन के भय से पूरी दुनिया अपने घरों में कैद होकर रह गयी है। ये जब चीन में था तो हमें यह लगा कि ये हम तक नहीं पहुंचेगा। तरह–तरह के कयास लगाये जा रहे थे कि हमारे देश की गर्म जलवायु इस वायरस को टिकने नहीं देगी और यह 25 डिग्री के तापमान को नहीं सह पाएगा और स्वतः ही नष्ट हो जायेगा। किन्तु सारे अनुमान विफल रहे और इसने भारत में भी कदम रख लिए। धीरे–धीरे इसने ऐसे पैर फैलाये कि सरकार ने सभी के लिए सामाजिक दूरी को ही एकमात्र विकल्प समझते हुए 21 दिन का लॉकडाउन घोषित कर दिया। रेल और गाड़ियों के पहिये क्या थमें सारी दुनिया जहां की तहां रुक गयी। सारे ऑफिस और कार्यालयों पर ताले लग गए। पहले 21 दिन 'जान है तो जहान है' के सहारे काट दिये, इसी प्रकार अगले कुछ दिन भी 'जान भी और जहान भी' के सकारात्मक विचार के सहारे निकल जाएंगे। इतिहास गवाह है कि चाहे परिस्थितियां कितनी भी विषम रही हों, हमने कभी हार नहीं मानी है। हम रुके हैं तो दुगुने जोश के साथ आगे भी बढ़े हैं।

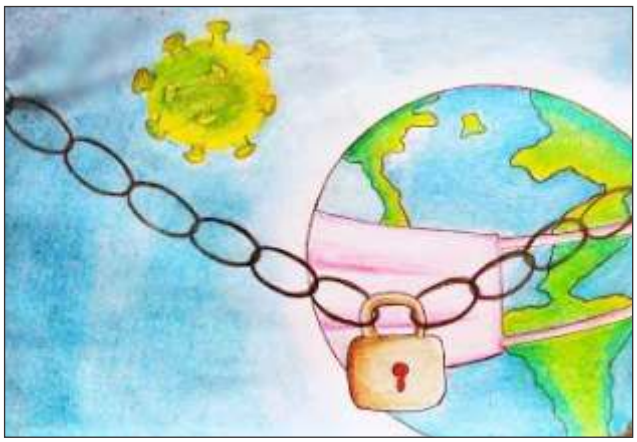

फोटोः गूगल

लॉकडाउन के चलते, वर्क फ्रॉम होम के दौरान, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा कोविड–19 के बारे में किए जा रहे सर्वेक्षण से जुडते हुए सभी वर्गों के लोगों से बातचीत करने का मौका मिला। यह एक प्रकार का टेलिफोनिक सर्वे है जिसका उद्देश्य कोविड–19 का लोगों की रोजी–रोटी पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना और समझना है। लोगों से बात करते हुए उनके दुख–दर्द को बांटने और संघर्ष को सुनने का मौका मिला।

समाज का हर वर्ग इस समय संकट के दौर से गुजर रहा है। चाहे युवा हो या 65 साल के बुजुर्ग सभी का कहना है कि ऐसा संकट पहली बार आया है जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी कि सारी दुनिया रुक जाएगी। दिहाड़ी मजदूरों के सामने सच में इस बार दो जून की रोटी का भी संकट आ पड़ा है। लोगों की जमापूंजी इस संघर्ष से जूझने में खत्म होती जा रही है। आगे भी इस संकट से उबरने में कम से कम 6 माह का समय लगेगा जिससे भविष्य की चिंता भी सता रही है। मासिक वेतन पाने वालों कि स्थिति फिर भी ठीक है क्योंकि उनके दिन जैसे–तैसे बीत रहे हैं। किन्तु उनकी अपनी ही चिंता है कि कहीं उनकी नौकरी पर संकट ना आ जाये। मदद के हाथ निरंतर बढ़ रहे हैं किन्तु वे नाकाफी हैं। सरकारी योजनाओं का लाभ निचले तबके को हो रहा है किन्तु वह ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। भले ही अपने जीवन और भविष्य की चिंता बनी हुई हो फिर भी अन्य जीवों (पालतू और आवारा पशुओं) के बारे में भी लोग निरंतर सोच रहे हैं और निरंतर उनकी मदद कर रहे हैं। घर पर रहने से घरेलू झगड़े और घरेलू हिंसा भी पैर फैलाने लगी हैं। कुछ लोगों का कहना है कि दिन भर फालतू बैठे रहने से स्वभाव में चिडचिड़ापन बढ़ने लगा है।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान में कार्यरत हैं)